केटलांक भाषागीतो

-सं. विजयशीलचन्द्रसूरि

व्रज भाषा-मिश्रित हिन्दीमां प्रभुभक्तिनां पदो अने गीतो, मध्यकालमां, जैन कविओए पण विपुल प्रमाणमां रच्यां छे. एवां थोडांक गीतो अत्रे प्रस्तुत छे. 'बिनयचंद' नामना (संभवतः गृहस्थ) कविए रचेलां आ गीतो वर्षो पूर्वे कोई प्रकीर्ण पानां परथी उतारी लीधेलां. ते पानां आजे तो हाथवगां नथी, एटले पुनः वाचन के सुधारानो अवकाश नथी. गीतोनो क्रमांक आम गोठव्यो छे : १.अजारा पार्श्वनाथगीत, २.नवपल्लवपार्श्वजिनगीत (मांगलोर-मांगरोळ), ३.गिरनारमंडन नेमनाथगीत, ४.ऊनामंडन नेमनाथगीत, ५.गच्छनायक श्रीविजयसेनसूरिगीत, ६.गच्छपति श्री विजयदेवसूरिगीत.

छेल्लां बे गीतोना आधारे, बिनयचंद, सत्तरमा शतकमां थया होवानुं मानी शकाय खरुं.

'गुजराती साहित्यकोश' मां (पृ.४०८) पांच विनयचंद्रनो उल्लेख थयो छे, परंतु मारी धारणा एवी छे के आ विनयचंद ते बधा करतां जुदा ज होवा जोईए.

१

श्रीअजारा पार्श्वनाथ गीत

रागः गूजरी ॥

पूजउ जीउ पारसनाथ दयार
मन बच काय करी सुद्ध मेरे छ्योरी चितजंजार पू० १
भीषन घनघोर बोर जर जिंसइ बरषती मूसरधार
फुनि फनि फार धरी शिर उपरि ज्यानि छत्राकार पू० २
एक भगति एक दरद देखावत कमठइंद अहि सार
बिनयचंद प्रभु पास **अझारो** सकल जंतु सुखकार पू० ३

इति गीतं समाप्तम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२

मंगलपुर मंडन श्रीनवपल्लवपार्श्वनाथ गीत

गीत ॥

राग: भयरव ॥

पूजउ पासजिनेसर देव
नवपल्लव नित करीइ सेव
नदीअ निवाण समुंद्र सवि नीर, न्हवण करु नवपल्लव सरीर १ पू०
दीप सवे चंगेरी करी अढार भाव(र) वनफूलि भरी
तरुवर जाति जगतमाहि जेह बावनचंदन कीजइ तेह २ पू०
सुरगिरि शैल अवर सम रूप अगर कपूर कस्तूरी धूप
कोडि इंद्र मिली पूजइ सार, तुहि भगति अणुआइ लगार ३ पू०
मंगलपुरमंडन जिन पास **नवपल्लव** नित नमु उल्लास
भावसहीत जे पूजा करइ **बिनयचंद** भवसायर तरइ ४ पू०

३

गिरिनार मंडन श्रीनेमनाथ गीत

राग : कनडु कल्याण ॥

कागद कहु धुंकइं सिकरी लषीइ
लिखतइं ए कागति न पाउं किनुं आगइं दुख भषीइ १ कागद०
कहा करुं लेख लखी आलोरुं मुखि नीसासा नीकलीइ
वइ नीसासा फाससु आवइ कोर बिलोनुं जिलीइ २ कागद०
फूनि लेखनकी धरुं मनि आसा तउ मुख मूंद न खलीइ
नयनां भरि भरि आंजू आवइ कागद छरु गिल भलीइ ३ कागद०
ओरां पासइ ज्याई लखाउं मेरा दुख सुनीवइ दुख पावइ
कूंहेतिउं ओ होई यावइ(?) उंनका दुख किउं बलीइ ४ कागद०
बिरह अगनि हूं ज्याई बूझाउं **गिरिनारिकुं** चिलीइ
बिनयचंद प्रभु बिरह निवारी **नेम राजीमति** मिलीइ ५ कागद० ॥

इति गीतं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४

ऊनामंडन श्रीनेमीनाथ गीत

राग : कनडु ॥

समुद्रबिजइ सुत नयनइ देखे प्रीति पाई जिऊं चंद चकोर
उन्नतपुरमि उन्नई आए शामघटा घट जिउं घनमोर १ समुद्र०
सिव... नयनि राजुल खरी लारि पशुअ पुकार करति तिउं सोर
नेमकुमर रथ फेरि सिद्धारे दुःख पावती राजुल अति घोर २ समुद्र०
बाउरी भईअ सुनत नही श्रवनि चाहति नेम चकित चिहुं और
जित तित पूछती पीउं कित पाउं कोऊ बताओ नेमकी ठोर ३ समुद्र०
गई गिरिनारी राजुल चित प्यारे नेमकुं पाय परति करज्योर
कहइ **बिनइचंद उन्नतपुर स्वामी** नेम आगइ शिवपुर गई दोरि ४ समुद्र०

५

गच्छनायक श्रीविजयसेनसूरिगीत

राग : गूजरी ॥

वंदउ **श्रीविजयसेन**सूरिराय
जस पद पंकज भविजन-मधुकर अंमृत बचन पीत आय वंदउ०
अकबर भूप महामति सुंदर धरम करत चित्त लाय
गुरु उपदेस सुणिउ जब तेरो छ्योरे पंखी सब गाय वंदउ०
खान मिलक ऊबरे मिली आवत लागत गुरुके पाय
गुरु मुखचंद देख्यो जब तेरो भवि चकोर सुख पाय वंदउ०
साह **कमा-कोडाई**नंदन नरनारी गुण गाय
बिनयचंद प्रभु **विजयसेनसूरी** चिहुं खंडि आन फिराय वंदउ० ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६

गच्छपति श्रीविजयदेवसूरिगीत

राग : सारिंग मल्हार ॥

अब मि पायोरी परम पटोधर **श्रीविजइसेनकु**
श्रीश्रीश्री **विजइदेवसूरीसर** सुर नर के मनि भायोरी १ परम०
ढुंढत ढुंढत सब गछ देखे तुं मेरे चित्त आयो
तप तप तपइ तेज तनुं रविकु तिनथइं तुंहि सवायो री २ परम०
अंजन खंजन मीनमृग लोचनी मोतिन चउक बनायो
कोकिल कंठि मयूर मधुरस्वरि **श्रीतपगछ** गुन गायो री ३ परम०
ओशवंश अवतंस **थिरा**सुत मात **रूपाई** जायो
बिनइचंद सेवक के साहिब त्रिभुवनि तिला(क) सुहायो री ४ परम०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org